Title: **NAMES OF GOD**
Preached by Dr. w euGENE SCOTT, PhD., Stanford University
At the Los Angeles University Cathedral
Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott. - all rights reserved

शीर्षक : **परमेश्वर के नाम**
डॉ. डब्लयू. यूजीन स्काट, विशारध, स्टैनफोर्ड विश्व विध्यालय,
द्वारा लासऐंजलस के गिरजाघर में उपदेश दिया गया
अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित

# NAMES OF GOD
# परमेश्वर के नाम

प्रति वर्ष जो मैं उपदेश देता आया हुँ, उसे २१वीं बार सुनने के बाद, आज जब आप यहाँ से बाहर जोयेंगे, तो यह आप के दिमाग की दिवार के किसी कोने में टंगा न रह जाये, परन्तु मैं आशा करता हुँ की यह आप के जीवन की हड्डियों के गूदे के साथ बहै और परमेश्वर के साथ रिश्ता बनाऐं और १९९६ के कुछ संघर्षों में आप को सहारा दे।

इसी के साथ मैं आप को पुराने नियम, यशायाह ५० की ओर ले चलता हुँ: "तुम में से कौन है" - और तुरन्त उपदेश का निशाना इस पर केंद्रित है - "तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है?" हमें पता है की हम किसी आत्मिक अपराधी या दुष्ट के बारे में नहीं बात कर रहे। हम उस के बारे में बात कर रहे हैं जो परमेश्वर का भय मानता है, आदर, क्षृद्धा, उसकी महानता को मानता और हम सब पर उसका पूर्ण अधिकार है। हम अविश्वासी की बात नहीं कर रहे। हम उस विशेष समूह के लोगों की बात कर रहे हैं जो आशापूर्वक आज यहाँ प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

"तुम में से कौन है जो परमेश्वर का भय मानता है, जो उसके दास की बातें सुनता है?" मैं फिर से इस शब्द का प्रयोग करता हुँ, "दुष्ट" नहीं। कोई सच में कोशिश कर रहा है - आप परमेश्वर का भय मानें, आप उस के सेवक की आवाज को सुनें। जब आप सच को सुनेंगे, और वह आप पर असर करता है और आप की दृष्टि को ज्योती दिखाई देती है, तो आप उसके साथ रहना चाहेंगे - आपके जैसे अच्छे लोग। यकीनन यहाँ पर आज ऐसा व्यक्ति नहीं है जो परमेश्वर का भय न मानता हो, जो कम से कम उस के दास की बातों को न सुनना चाहता हो, क्योंकि उस के दास की बातों के बारे में आप जो कहें, इस का अर्थ यह है की आप मानना चाहते हैं, तो "उन को जो अन्धियारे में चलते हैं, जिन के पास कोई ज्योति नहीं," यह उपदेश असर करता है।

आज से पहले आप मेरे सात २० बार थे। मुझे पिछले वर्ष ही इस का सच पता चल गया था। आप जा रहे हैं और एकाएक बिजली चली जाती है और आप को किसी भी दिशा में आपका मार्ग दिखाई नहीं देता। मैं नहीं जानता की आज यह उपदेश किस पर असर करेगा, परन्तु आप चाहें जहाँ हैं - यहाँ पर बैठे हैं, दूरदर्शन पर देख रहे हैं, सारे संसार में रेडियो पर सुन रहे हैं; मैं जानता हुँ इस पल कुछ लोग ऐसे भी हैं जो छुप रहे हैं - यह भाव उन के चहरे पर दिख रहा होगा, वे बताना नहीं चाहते - परन्तु जब आप सुन रहे हैं, तो आप जानते हैं की आप अंधकार में हैं, आप को कोई ज्योती नहीं दिखाई दे रही। जो भी दबाव हो -

परिस्थिती, धन, सेहत, प्रिये जन, रिश्तों का टूटना, अंधकार के जितने भी लिफाफे हों; और कैसा भी अंधकार, जिस का कारण आप नहीं जानते हों, परन्तु आप उस में हैं, वह आप को निगल रहा है। और यदी आप आज यहाँ उपस्थित नहीं हैं, तो मैं आप से कुछ कहना चाहता हुँ की इस वर्ष के पूरा होने से पहले यह आप को निशाना बनायेगा - मेरी मश्हूर कहावत, "धर्मि पुरूष आन्नद मनाओ, आगे और कठिनाईयाँ आने वाली है।"

जब तक मैं सह नहीं जान लेता की मरे विचार और आप के विचार एक समान हैं, तब तक मैं अपने उपदेश को आगे नहीं बडाऊँगा। क्या आप जोनते हैं की मैं किस बारे में कह रहा हुँ? मुझे पता है की कई मसीही प्रचारक आप से पूछते हैं की क्या आप परमेश्वर की सेवा सही तरह कर रहे हैं या नहीं। ऐसा आप के साथ कभी नहीं होगा। 'बहन साल्स' और 'भाई जिम्मी' आप की ओर उँगली दिखाकर पूछेंगे। जब आप किसी से कहेंगे की वे अंधकार में हैं, तो वे अपनी धार्मिक पोषाक पहन कर, आत्म धार्मिक पोषाक आप से ले कर पहनेंगे और उन की आँखों में आप को प्रश्न दिखाई देगा, "आप ने क्या गलती करी है जो आप के साथ ऐसा हो रहा है?" यह अंधकार उन को घेर लेता है, "जो प्रभु का भय मानते हैं और अपने दास की आवाज सुनते हैं, पर फिर भी अंधकार में चलते हैं और ज्योती नहीं पाते।"

"तो हमें क्या करना चाहिये?" आप में से कितने हैं, जो यह समझ कर जाना चाहते हैं, की इस उपदेश में ऐसा कुछ नहीं जो आप के लायक है? अपने हाथ ऊपर उठाईये, क्योंकि मैं स्वंय आप को बाहर पहुँचा कर आऊँगा। मैं आप से दुबारा पूछना चाहता हुँ की आप में से कितने यह जानते हैं की मैं क्या कह रहा हुँ? अंधकार ....। और हमेशा एक हलका सा विचार आता है, "मैंने क्या गलती की।" मैं आप को बताता हुँ की क्या नहीं करना है, ठीक है?

ग्यारहवाँ वचनः मैं इसे जल्द समाप्त करता हुँ, क्योंकी उपदेश यह है की आप को क्या करना चाहिये। "देखो, तुम सब जो आग जलाते और अग्नीबाणों को कमर में बाँधते हो। तुम सब अपनी जलाई हुई आग में और अपने जलाये हुए अग्निबाणों के बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में पडे रहोगे।" यदी हो सका तो मैं इस से जल्द से जल्द छुटकारा पाना चाहूँगा क्योंकि यह कठिन है.... क्योंकी हम अपने रास्ते के रोडों और अंधकार से कुछ इसी तरह बर्ताव करते हैं। मैं जानता हुँ की जेन्नी स्काट ने इतने वर्षो तक कैसे किया।

कई लोग जो मुझे अच्छि तरह जानते हैं और मेरे साथ रहते हैं, वे इस बात पर हँसेंगे, क्योंकी मैं धुम्रपान करता हुँ, और कई मित्रों से मैंने तोफे में सिगार, तंम्बाकू और सिगरेट जलाने वाले छोटे पैंसिल की तरह के लाईटर स्विकार करे हैं। ये सब से अधिक परेशान करने वाली वस्तुऐं हैं। जब आप को इन की आवश्यक्ता होती है, तब ये काम में नहीं आते। ये छोटी पैंसिलों की तरह होते हैं .... काश मुझे एक मिल जाती - देखा जब मुझे इस की आवश्यक्ता है तब मुझे नही मिलती। मैं चार या पाँच रोचक व सुन्दर लाईटरों को अपने साथ रखता हुँ, परन्तु जब मैं किसी के सामने इन का प्रयोग कर अपनी छाप बनाना चाहता हुँ, तो यह साथ नहीं देते हैं और उस समय मुझे अपनी पुरानी माचिस याद आ जाती है। यह कभी दगा नहीं देती।

कई लोग जो मुझे जानते हैं, वे इस बात पर हँसेंगे क्योंकी मैं अपने अभीप्राय को आलंकारिक भाषा में बताता हुँ। जब अंधेरा होता है तो मैं सब से पहले माचिस जलाता हुँ। मेरे लिये एक लडका काम करता है - मैं परमेश्वर के साथ इतने वर्षो से किस तरह रह रहा हुँ, वह इस बात को प्रतिरूप में दिखाता है। मैं इसे

इसलिये इतनी जल्दी पहचानता हुँ - "मुझे पहचानने के लिये किसी की आवश्यक्ता है।" वह लडका मेरे लिये यही काम करता है - मैं एक अत्युत्तम कहानी बताता हुँ।

हम हवाई जहाज से मेरे घर, लेक अलमानोर गये। हवाई अड्डे पर हमारी एक कार रखी रहती है। हम पहली बार वसंत ऋतु में घर आये हैं, जो अब तक बंद पडा हुआ था। इसलिये मुझे पता था की घर में किराने का कोई समान नहीं होगा। हम एक छोटी जगह पर रुकते हैं। मेरी कार बहुत ही अदभुत कार है, जो किसी भी मौसम में चल पडती है। आप उसे १० फीट गहरी बर्फ में दबा दें, फिर उसे खोद कर निकालें, वह चालू हो जायेगी। आज कल इस तरह की कार नहीं बनाते। वह एक जीर्ण स्टेशन वैगन है, परन्तु चालू हो जाती है।

...सो मैं और मेरे साथ कुछ लडके, जो घर खोलने में मेरी मदद करेंगे, हम इस स्टेशन वैगन में बैठ कर, चैस्टर नामक छोटे शहर की ओर निकल पडते हैं, जो हवाई अड्डे से करीब एक मील की दूरी पर होगा। हम कार में तेल भरवाने के लिये रुकते हैं, और मुझे पता है की घर में किराना समान नहीं है, तो मैं इस लडके को - मैं इस का नाम क्या रखूँ? मैं इसकी पहचान बताना नहीं चाहता। क्या मैं किसी नाम का प्रयोग कर सकता हुँ? मेरे पास ऐसा कोई नहीं है जिस का नाम याकूब हो, सो इसे हम याकूब बुलाते हैं, परन्तु जो मेरे साथ काम करते हैं, वे जानते हैं की वह कौन है। हम जहाँ रुके हुए हैं, उसके दूसरी ओर एक किराने की दुकान है। सडक इतनी चौडी है की चार गाडीयों के आने जाने का रास्ता बना हुआ है। कारें और गाडीयाँ आ जा रही हैं। मैंने जैसे ही कहा, "याकूब, जा कर उस किराने की दुकान से .....।" (मैं कहना चाहता था की, "ये वस्तुऐं खरीद लाओ")। परन्तु जैसे ही मैंने कहा "जाओ" वह उठ कर जाने लगा और जब तक मैं वाक्य को समाप्त करता, वह सडक पार कर चुका था। उसे इस बात का बिलकुल भी अनुमान नहीं था की मैं किराने की दुकान से क्या मंगवाना चाहता था। परन्तु वह किराने की दुकान जा रहा था।

मैं परमेश्वर के साथ ऐसा ही हुँ। पुराने नियम का याकूब ऐसा ही था। याकूब जो करने जा रहा था, उस में कोई गलती नहीं थी। परमेश्वर ने याकूब और एसाव के पैदा होने ये पहले ही कह दिया था: "याकूब से में प्रीती रखता हुँ, ऐसाव से मैं घृणा करता हुँ।" परन्तु याकूब अपनी क्षमता से परमेश्वर की इच्छा को पुरा करने जा रहा था। वह परमेश्वर के कार्य करने का इंतजार नहीं करना चाहता था। वह ... और उसकी माँ, दोनों मिल कर, परमेश्वर के कार्य को परमेश्वर के वहाँ पहुँचने से पहले ही करना चाहते थे। उसके नाम का अर्थ है, "एडी पकडने वाला।" वह एसाव की एडी पकडे उत्पन्न हुआ था। पहले एसाव उत्पन्न हुआ और पीछे याकूब, एसाव की एडी पकडे हुए पैदा हुआ। याकूब नहीं चाहता था की एसाव पहले पैदा हो। वे गर्भ में लड रहे थे। "ईश्वर की कसम, मैं उसका जन्म लेना कठिन कर दूँगा।" यही उस की जीवन कथा थी, जब तक उस मशहूर रात को, उस ने स्वर्गदूत संग मल्लयुद्ध न किया। अंत में स्वर्गदूत ने उसकी जाँघ की नस को छूआ और याकूब की नस चढ गयी। वह उसे पकडे रहा। स्वर्गदूत ने उसका स्वभाव बदला, उसका नाम याकूब, स्वर्गदूत ने उसका स्वभाव बदला, उसका नाम याकूब (एडी पकडने वाला) से बदल कर "इस्राएल" रखा। इस-रा-एल: "एक राजकुमार जो परमेश्वर से शक्ति पाता है;" मूलार्थक रूप से देखा जाये तो एल का अर्थ "परमेश्वर द्वारा शासन" होता है। परमेश्वर द्वारा शासन - एक नयी शक्ति पर अधिकार प्राप्त हुआ। यहाँ पर यही बताया जा रहा है।

आप किसी भी तरह के अंधकार का सामना कर रहे हों। आप सब से पहले स्वंय उसे दूर करने की कोशिश करेंगे - माचिस की तीली जला कर, आग जला कर, अंधकार को दूर करना चाहेंगे - इस तरह आप परमेश्वर द्वारा दी गयी बुद्धि का उपयोग कर रहे हैं और अपने तरीके से समस्या को सुलझाने के लिये

परमेश्वर से आगे जाते हैं। मैं पिछले कई सप्ताह से यही उपदेश दे रहा हुँ। आप अपनी समस्याओं को परमेश्वर को सौंप दीजीये, आप आराम करीये और धैर्य से इंतजार करीये - आराम करीये और धैर्य से इंतजार करीये। यहाँ पर जो वादा किया गया है, वह पक्का है। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पडता की आप परमेश्वर के प्रती कितने समर्पित हैं, आप कितने अच्छे हैं। जो सही है उसे करने के लिये आप चाहे जो भी कठिनाई उठा रहे हों, मार्ग के कुछ भागों में अंधकार तो होगा ही - एक ऐसी परिस्थिती आती है जो आँखों के सामने बादल बन कर छा जाती है। यदी आप मूसल कूटने लगें, अपनी स्वंय की आग जलाने लगें - उद्धार के लिये अपने शारीरिक यंत्रों का प्रयोग करने लगें, आपकी बुद्धि ही एकमात्र जवाब है, एक ही समय में हर दिशा में जाने लगें, बिना यह जाने की परमेश्वर आप से क्या मंगवाना चाहता है, आप किराने की दुकान जाने लगें, तो इस का अर्थ यह है की आप "अपनी जलाई हुई आग की रौशनी में चल रहे हैं।" आप केवल उतनी ही रौशनी पायेंगे जो आप ने जलाई है, अधिक नहीं। और "तुम सन्ताप में पडे रहोगे।" मैं नहीं जानता की इससे अधिक सपष्ट रीती से कैसे बताऊँ। मैं इस बात पर पूरा उपदेश नहीं देना चाहता।

मसीही जीवन में एक स्थापना होनी चाहिये - जो लोग हर समय हमारे साथ, अदृष्य परमेश्वर की उपस्थिती में विश्वास करने के लिये आये हैं - एक स्थापना होनी चाहिये ... याकूब के उस लंगडने में या उस मध्यांतर में, या जैसे की मैं २० वर्षों से कहता आ रहा हुँ की उन माचिस के डिब्बों को पहँच से दूर कर दीजीये, ताकी स्वंय आग जलाने में कुछ संघर्ष हो।

मैं प्रतिरूप की भाषा बोल रहा हुँ। मसीही जोवन का अर्थ यह नहीं है की हम मसीह के पास उस समय जायें, जब हम स्वंय नहीं कर पा रहे हैं। मसीहत एक मार्ग है, एक चाल है, एक यात्रा है। यह एक जीवन शैली है जो अदृष्य उपस्थिती को पहचानती है और समर्पित है। वह सर्वदा है। समर्पित होने के लिये उसकी उपस्थिती को बनाना नहीं पडता है। परन्तु यह संसार, यह शरीर और शैतान, हम पर काबू पाने के लिये हम पर हावी होते हैं। परमेश्वर की आत्मा, सौम्य आत्मा है। वह तर्क नहीं करता। वह उन की मदद नहीं करता जो उसे नहीं बुलाते। वह उन को पसन्द नहीं करता जो स्वंय पर निर्भर रहते हैं। यदी आप स्वंय माचिस जलाना चाहते हैं, तो अपनी समस्या को स्वंय सुलझाईये। वह आप को आग जलाने देगा, अंधकार में ज्योती जलाने देगा। आप में से कई ऐसा ही करते आ रहे हैं, कई बार जेनी स्काट भी यह करता है, परन्तु अब मैं होशियार हो गया हुँ।

माचिस के डिब्बे को पहुँच से दूर रखें। अपने बाकी के जीवन भर याकूब लंगडाता रहा, केवल इसलिये की उसे याद रहे की उस का जीवन परमेश्वर द्वारा शासित है। परमेश्वर को राह दिखाने दें, बजाये इसके की आप स्वंय उस कार्य को कर के सब गडबड कर दें और जब सब गडबड हो जाये, तब परमेश्वर को कहें की वह ठीक करे। यह अंधकार से निकलने का तरीका नहीं है। अंधकार होता है। हमें क्या नहीं करना है? केवल परमेश्वर की सुनें। यदी उस से कोई जवाब नहीं आता, तो आगे बड कर माचिस जलाईये। परन्तु पहली ही बार अपने आप संघर्ष करना, स्वंय चक्का चलाना, अपने उनमत्त तनाव, अपनी कमजोरी, अपने आप को उस समस्या से छुटकारा दिलाने की आवश्यक्ता को छोड दें।

मैं इस पर और समय बर्बाद नहीं करूँगा। यदी यह बात अब तक आप के समझ में नहीं आई तो फिर अलविदा।

यदी आप वैसा नहीं करेंगे, तो फिर क्या करेंगे? आप का किसी भी तरीके के अंधकार क्यों न हो, स्वंय आग जलाने से पहले लंम्बे समय तक रूकें और यह करें: "उसे प्रभु के नाम पर विश्वास करने दो।" यह एक साधारण वाक्य है। मैं इस को विस्तार से बताता हुँ। "उसे विश्वास करने दो" - 'इबेतेह' इब्रानी शब्द

है। इस की जड 'बेतेह' है। इस का अर्थ है "स्वंय को किसी के समक्ष डाल देना" - इतना मजबूर हो जाना की आप किसी के सामने मूँह के बल गिर पडें। यह इब्रानियों में सब से बेहतरीन शब्द है जो आवश्यक्ता के समय परमेश्वर के समक्ष आप के व्यवहार को दर्शाता है। "वह स्वंय को मूँह के बल परमेश्वर के समक्ष गिरा दे।" यह इतना साधारण है की मुझे लगता है की मैं आप की बुद्धि को तुच्छ समझ रहा हुँ। यही साधारण बातें हम भूल जाते हैं।

"ओह, मैं अंधकार में हुँ।" खुजाना, खुजाना, खुजाना, खुजाना, खुजाना। "मेरा वह कहाँ है ... मेरा आग जलाने वाला लाईटर कहाँ है?" अंधकार छा जाता है। अकेले में खोजीये, प्रार्थनापूर्वक, असाहयता से स्वंय को किस पर थोपना है? "प्रभु के नाम से।" बाकी सारी बातों को केंद्र से दूर कर के, अंधकार को भी केंद्र से दूर कर के, पूरे समर्पन के साथ, मैं किस पर निर्भर रहूँ? "प्रभु के नाम पर।"

यहाँ पर मैं वेदान्ती और दुःखी हो जाता हुँ और बोज अनुभव करता हुँ, परन्तु वाक्य का अर्थ समाप्त हो जाता हैः "परमेश्वर के नाम।" इतने नाम क्यों? हम प्रारंम्भ से आरंम्भ करते हैं। प्रारंम्भ में ***'इलोहिम'*** ने आसमान और धरती को बनाया। जड - यह अदभुत शब्द इब्रानियों में उलटा पढा जाता है, क्योंकी इसे दायें से बायें लिखा जाता है, पर अंग्रेजी में इसे पलट दिया गया - ***इल***, "सब से उच्च।" परमेश्वर के नाम का सब से पहला वर्णन - "सब से उच्च," सब वस्तु से ऊपर और उत्पत्ति की पहली आयत में बहुवचन में। "आदी में ***इलोहिम***," जो सब से उच्च हैं; परमेश्वरों - "आकाश और पृथ्वि की सृष्टि की।" फिर परमेश्वर की पसन्द पर आते हैं, अब्राहम। फिर परमेश्वर ***इल*** शब्द में कुछ बडाने लगता है। ***इलोहिम*** - ***इलोलम*** यानी 'सर्वाधिक उच्च', परमेश्वर सब से उच्च - यदी उच्च काफी नहीं है तो, "सर्वाधिक उच्च, सब से उच्च।"

***इल शद्दाई*** - मैं इस के बारे में उस दिन उपदेश दूँगा जब हम 'माँ का दिन' बनायेंगे; यथाशब्दः "वक्षस्थल वाली।" यह एक चित्र है जिस में माँ अपने बच्चे को अपनी छाती से लगा कर स्तनपान करा रही है और उस की हर आवश्यक्ता की वस्तुऐं उसे प्रधान कर रही है। ये सारे नाम उस वक्त उभरते हैं जब परमेश्वर अपने एक मात्र विश्वासी को दर्शन देता है, जो उस पर विश्वास करता है, अब्राहम - और परमेश्वर ने उसे सारे संसार के लोगों में से चुन लिया की वह उसे अपना दर्शन दे सके।

फिर इस्राएल का महान दैवी प्रकाशन आता है - मूसा द्वारा लोगों को बाहर निकाल कर लाना और सीनै पर्वत पर दैवी प्रकाशन पाना। परन्तु तब परमेश्वर कहता है, "मुझे ***इल*** के नाम से जाना जाता था" - 'सब से उच्च' - "परन्तु अब मैं स्वंय को ***यहावे***, यहोवा, के रूप में दर्शन दूँगा" - परमेश्वर का यह नाम इतना प्रसिद्ध है की कई बाईबल के विद्वान दो अलग लेखकों को रख कर, मूसा की बनाई पाँच पुस्तकों को लिखवाते हैं, क्योंकी एक ***इल*** की आराधना करता है और दूसरा ***यहावे या*** यहोवा की आराधना करता है। यह एक ही परमेश्वर है जो लोगों में अपने दैवी प्रकाशन को फैला रहा है और वह नैमों के द्वारा इस तरह कर रहा है। नामों के कुछ अर्थ होते हैं, केवल कोई पदवी नहीं। जब वह कोई चिन्ह बताता है तो वह अस का अर्थ समझाता है और फिर एक नाम प्रधान करता है। यह अंग्रेजी में यहावे से यहोवा बन गया, परन्तु पहले वह चार अक्षर का ***योद-हे-वव*** होता था। ***यहावे***, यहोवा।

मैं आप को यह बता चुका हुँ की इब्रानियों एक चित्र की भाषा है। यहोवा का चित्र कैसा है? जब आप "सब से उच्च" की ओर देखते हैं तो आप उनके गुनों को पहचानते हैं, तो वह कहता है, "मैं तुम पर

यहोवा के रूप में दर्शन दूँगा।" शब्द का चित्रांकण बहुत अच्छि तरह किया गया है। ऐसा उस समय नहीं था जब पहली बार शब्द मिला था। मेरे संग ईश्वर ज्ञान की ओर रहें; सोचीये की आप ने हाथों में एक पाईप पकडा हुआ है। क्या कभी आप ने अपने हाथों में पानी का पाईप पकड कर सामने से उसे दबाने की कोशिश करी है? ऐसा करने से आप दबाव अनुभव करेंगे, और जब आप झोड देंगे तो पानी पूरे प्रभाव के साथ बहार निकलता है। यहोवा नाम का सब से अच्छा चित्र जो मैं बता सकता हुँ वह यही है। ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर का स्वभाव पानी के दबाव की तरह बहार निकल कर उसके लाभों को अपने उपर छिडकना चाहता हो। यह यहोवा है - परमेश्वर दैवी प्रकाशन देने के लिये दबाव डाल रहा है।

और उन लोगों के लिये जिन्हें परमेश्वर ने अपनी भविष्यवाणी को इस संसार में सुनाने के लिये चुना है, उन से वह कहता है, " मैं अब केवल इल की तरह नहीं परन्तु यहोवा के रूप में दैवी प्रकाशन देने वाला हुँ।"

परन्तु कितनी दुख भरी बात है की भविष्यवक्ताओं के बीच में शैतान बीच में आ जाता है क्योंकी विद्वानों ने अपने दिमाग का प्रयोग कर गैर मसीहों की तरह, लोगों में इस बात का प्रचार फैलाया की यहोवा ऐसा नाम है जो मनुष्य के पहुँच से बहार है और इस का प्रयोग नहीं करना चाहिये। इसलिये जब आप अपनी बाईबल में परमेश्वर नाम को पढते हैं, तो यह जान लीजीये की वह ***यहावे या*** यहोवा के बदले में लिया गया है।

पुराने इब्रानि, आराधना में जब पवित्रवचन पढते हैं तो यहोवा शब्द पर पहुँचने पर वे उसे ***अदोनाई*** कहते हैं, जो प्रभु का एक और शब्द है। वे 'यहोवा' नहीं बोलते हैं। वे उसे रहस्यमई दुनिया में भैंक देते हैं। जब प्रभु अपने आप को बताना चाहते थे की वे क्या हैं, तो यहोवा पानी के पाईप से निकलकर इन लोगों को विशेष आकृति या विशेष आवश्यक्ताओं के माध्यम से दैवी प्रकाशन देते थे।

अब मैं चंगाई के बारे में बताता हुँ। मैं नहीं जानता की आप का अंधकार क्या है, परन्तु पूरे पवित्रशास्त्र में यहोवा नाम इस के साथ जुडा हुआ है: यहोवा - "कुछ विशेष।" आपके और मेरे अंधकार में, परमेश्वर हमें दैवी दर्शन के द्वारा बताते हैं की हमारे लिये क्या अच्छा है और हमारा विश्वास उस नाम के कथन पर लपक जाता है और कहता है की यही ठीक है। जेम्स डुन ने एक बार कहा की परमेश्वर एक विशाल वृक्ष की तरह है; हर एक व्यक्ति के लिये एक डाल है। मैं सामान्य तरह के प्रचार को नहीं मानता जो हम पर असर नहीं करता और ईश्वर ज्ञान और बाईबल की बातों से हम इस बात पर पहुँचे हैं की अंधकार से कैसे छुटकारा पा सकते हैं। मेरे अंधकार में, जहाँ बिलकुल भी ज्योती नहीं है, मुझे उस पर शक नहीं करना है जो परमेश्वर ने मुझे ज्योती में बताया था; और मेरे अंधकार में, मुझे स्वंय ज्योती नहीं जलानी चाहिये, मुझे परमेश्वर के नामों को याद करना चाहिये और यह मुझे देखना है की क्या कोई नाम है जो मेरी स्थिती के अनुकूल है।

आप कहते हैं की आप की अल्प व्यय सम्बंधी विपत्ति है - यहोवा-जिरेह। मैंने प्रारंम्भ में बाताया की मैं उन लोगों के बीच प्रचार कर रहा हुँ जो विश्वासी हैं, वो विश्वासी जो अंधकार में हैं उसके सेवक की आवाज सुन कर मानते हैं। क्या आप का अंधकार वृत संम्बंधी हैं - आप को अंधकार से बाहर का रास्ता नहीं दिख रहा? इस से पहले की आप किसी व्यक्ति की खोज में निकलें जो आप से ३३% दाम माँगै - और माचिस की तीली जलाने से पहले अपने आप को परमेश्वर के समक्ष दीन बनायें, तो आप अंधकार को पार कर पायेंगे - आप देख नहीं सकते, परन्तु परमेश्वर देख सकता है - और कहता है, "एक पल के लिये रूको!

'परमेश्वर तुम्हें देगा': ***यहोवा-जिरेह***।" शब्द का अर्थ यही है।

हॉल में एक चित्र है। परमेश्वर ने जो सब से महान तौहफा अब्राहम को दिया था, परमेश्वर ने कहा, "मैं उसे वापस ले रहा हुँ। उसे पहाडी पर ले जाओ और होंबली चढाओ।" पहाडी के पास पहुँच कर इसहाक ने पूछा, "आग और लकडी तो है; पर होमबली के लिये लकडी कहाँ है?" - वह यह नहीं जानता था की वही होम बली के लिये चढाया जायेगा।

अपने सेवकों को पहाडी के नीचे छोडते हुए कहा: "हम फिर लौट आयेंगे;" यह नहीं की "मैं लौटूँगा।" इसी स्थान पर अब्राहम को परमेश्वर का वादा मिला होगा; इसलिये यह हमारे हॉल में एक प्रतिमा है। अब्राम परमेश्वर पर इतना विश्वास करने लगा था की वह जानता था की यह उसे का वादा किया हुआ पुत्र है, उसका वंश जिस के लिये उसने जीवन भर इंतजार किया था; यदी वह परमेश्वर की बात मान कर उस की बली चढा दे तो परमेश्वर उसे मृत्कों में से जिला देगा। इसहाक का जन्म एक चमत्कार था; यदी वह उसे मृत्कों में से जिला दे तो यह भी चमत्कार होगा। अब्राहम को बिलकुल भी शक नहीं था; वह और इसहाक पहाडी से लौट आयेंगे। उस स्थान पर नाम आता है "परमेश्वर आप ही देगा।" एक बिलकुल ही नमुंम्किन परिस्थिती में विश्वास ने अब्राहम पर काबू पाया और उस ने कहा: "परमेश्वर आप ही देगा।" वह देगा, एक दिन एक समय। मैं नहीं जानता की अंधकार में कौन है, और आप भी मुझे इस बारे में मत बताईये; परन्तु इस से पहले की आप वृत संम्बंधी अंधकार से बाहर निकलने के लिये अपनी माचिस स्वंय जलाये, यह वचन कह रहा है, "अपना विश्वास परमेश्वर पर रखीये।" वह वचन इस तरह है "परमेश्वर के नाम पर विश्वास रखीये।" किंग जेम्स की बाईबल में क्या यह बडे अक्षरों में नहीं है? यहोवा - ***यहोवा-जिरेह।***

"यह मेरी समस्या नहीं है।" हो सकता है आप की समस्या बिमारी है। मैं आज सुबह बाजा बनाना चाहता हुँ। हो सकता है आप की समस्या बिमारी है - आपकी या आप के प्रियजन की, और आप इस अंधकार से बहार निकलने के लिये बेताब होंगे। मैं कई बार ऐसी स्थिती से निकला हुँ जब डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था, "यह अंत है, अब कुछ नहीं किया जा सकता।" हमारा अंत परमेश्वर का प्रारंम्भ है।

आप की समस्या बिमारी होगी, जिस से आप लड रहे हैं। यहाँ से बाहर निकलने का रास्ता नहीं दिखाई पडता। कोई ज्योती नहीं है।अपने आप आग जलाना भूल जाओ और परमेश्वर के नाम पर विश्वास करो - ***यहोवा-रफा।*** कभी कबार परमेश्वर की चंगाई की लहरों पर तैर कर चागई पाने से गिरजाघर का इतिहास पलटा है क्योंकी लोग परमेश्वर के इस स्वभाव से रूबरू होते हैं। जंगल में अपनी पहली परिक्षा में जब लोग परमेश्वर के विरूद्ध बडबडा रहे थे तब परमेश्वर ने उन से कहा की, "मैं ***यहोवा-रफा*** हुँ।"

अब मैं आप को परमेश्वर के नामों के बारे में कुछ कहता हुँ। कई बार परमेश्वर अपने भविश्यवक्ताओं को ऐसे अनुभव करवाता है, जहाँ वे परमेश्वर को कार्य करते हुए देखते हैं। वे पिर उस के कार्यो को देख कर - उसका एक नाम रखते हैं। "परमेश्वर ऐसा है।" यशायाह ने ऐसा ही किया, उसने अपने दिमाग में लोगों के प्रति परमेश्वर के व्यवहार के इतिहास को दौहराया। यसायाह ने ऐसा किया, परमेश्वर ने नहीं। यशायाह ने कहा, "आप वो परमेश्वर हैं जो अपने आप को छुपाता है।"

परन्तु कई बार ये नाम स्वंय परमेश्वर के मुख से निकलते हैं। ऐसा लगता है जैसे वह नहीं चाहता की हम अपने अनुभव से सीखें। वह एक खिडकी खोल कर अपने आप से कहता है, "मैं इस तरह हुँ, मैं यह

बनना चाहता हुं।" वह ऐसा अवसर चुनता है जब लोग आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और वह कहता है, "मैं यह हुं" - परिस्थिती, व्यक्ति का स्वभाव, इन स्वभावों के बिना मनुष्य नहीं रह सकता - "मैं ***यहोवा-रफा*** हुं।"

मिन्नेस्टो विश्वविध्यालय के एक वैज्ञैनिक मुझे अभी भी याद है जीसे कई वर्षों तक बिल्लि ग्रहम ने अपनी सभाओं में, यह बताने के लिये साक्षी देने के लिये प्रयोग किया की वैज्ञानिक के जीवन में भी परमेश्वर का विश्वास है। एक दिन मुझे जॉर्ज ओटिस का फोन आया, "जेनी, फ्रेड अस्पताल में भरती है। उसके पेट में कुछ रुकावट है। यदी आपरेशन नहीं होता तो वह मर सकता है। तुम उसके साथ पढे हुए हो इसलिये मुझे लगता है की जो व्यक्ति उस से इस समय बात कर सकता है वह तुम हो।" मैंने बिना हिचकिचाये, हवाई जहाज पकडा और मिन्नेस्टो से मिन्नियापोलिस गया। मैं फ्रेड से मिला और करीब एक घंटा उसके साथ बिताया। फ्रेड एक वजाह ढूँढ रहा था की हम मिल कर परमेश्वर से प्रार्थना करें और वह उसे चंगाई दे। मैंने झुंझला कर उस से कहा की "फ्रेड परमेश्वर को कोई वजाह नहीं चाहिये, वह जो है सो है। उसने कहा है की यह उसका स्वभाव है। दूसरे लोग जैसे बिना मतलब की बातों पर टेक लगाते है, यह ऐसा नहीं है। तुम और मैं (दो) ..... पवित्रवचन कहता है, 'आप में से दो यदी किसी बात पर सहमत हो कर मांगें,' और यदी तुम में से दो मेरे नाम से इक्टठे हो जोयें, तो मैं उन के बीच में हाजिर रहूँगा।' फ्रेड, हमें केवल उसे जैसा है वैसा रहने देना है। हमें चंगाई देने के लिये उसे मनाना नहीं है। यही उसका स्वभाव है; वह चंगाई देने वाला परमेश्वर है। मैं उसके प्रभुत्व को नहीं जानता - हम उसके हाथों से जीवन की चाबी नहीं ले सकते, परन्तु मुझे पता है की चंगाई के बारे में कब बात करनी है, मैं उसकी ओर हुं। उसने हमें इसलिये नहीं सिरजा की हम कष्ट उठायें। हम अपने जीवन में गडबडी करते हैं, हम समस्या को उत्पन्न करते हैं और कष्ट अंधकार की तरह आते हैं। परन्तु परमेश्वर सिद्ध पुरुष के लिये कहता है की, जब मृत्यु आती है, 'वह उनकी साँस ले लेता है।'"

मैं वह प्रचारक हुं ... जो यह कहता है: आप के साथ मैं लडूँगा यदी आप मुझ से कहें की कोई सिद्ध पुरुष के बिमार होने का अर्थ यह है की वह दूसरी श्रेणी का मसीह है। साथ ही लोक विरुद्धता के साथ मैं यह भी कहूँगा की यदी आप की बिमारी का अंधकार या जैसा भी अंधकार जो आप को छू रहा है, उससे स्वंय छुटकारा पाने के बजाये अपने आप को परमेश्वर के नाम पर छोड दो। "परमेश्वर, आप ने कहा है की चंगाई देना आप का स्वभाव है। मैं उस विशेष दैवी प्रकाशन को लूँगा और उसे अपने अंधकार की ज्योती बनाऊँगा।"

मैं अभी बस न्यूँ यार्क से लौटा हुं। ऊपर बादल - सितारे, चाँद - सब चमक रहे हैं। बादलों के नीचे भूल जाईये, परन्तु एक बात याद रखीये की अंधकार के ऊपर परमेश्वर, आज ..., कल ..., और सरवदा ... एक सा है, और यदी आप का अंधकार बिमारी है तो उसके नाम पर अपने आप को गिरा दीजीये।

"यह मेरी समस्या नहीं है। मैं आज यहाँ बैठा हुं परन्तु मैं पाप के ऐहसास के कारण मैं अपने आप को इस लायक नहीं समझता।" हम सब लडखडाते हैं। मैं प्रधानों की तरह पाप का व्याख्या नहीं करता - जो की सब कुछ है। पाप वह है, जब हम परमेश्वर की राह से हट कर अपनी राह पर चलते हैं। वहाँ तक नहीं पहुँच पाने को पाप कहते हैं। आप परमेश्वर के जितने करीब जायेंगे, उतने ही बुद्धि सचेत होती जाती है। हम में से हर एक व्यक्ति अपने साथ, नीचता का अहसास ले कर चलता है, इसलिये यह गाना "अदभुत अनुग्रह" को सारे संसार में कितना सराहा जाता है। यह सामान्य है। मेरी आवाज में एक और उडाउ पुत्र या पुत्रि छुपे हए है, जो नीचता के अंधकार से मार खा रहे हैं और आप ऐसे अंधकार में हैं, जो अलग तरह का है। यह

इस तरह का हो सकता है: आप परमेश्वर का भय मानते हैं, आप उसके दास की आवाज सुनते हैं; परन्तु अंधकार के बीच घृणा उत्पन्न होती है, क्योंकि शैतान जो भाईयों पर दोष लगाने वाला है, वह वहाँ बैठ कर हमें हमारी पुरानी गलतीयों को याद दिलाता है।

***यहोवा- सिदकेनु***। अब मैं जल्दी करूँगा। ***यहोवा- सिदकेनु***: "वह हमारी धार्मिकता है।" परमेश्वर मेरी धार्मिकता में दिल्चस्पी नहीं रखता। उसने यहोवा नाम में हमें बताया है की वह हमारा सदाचार बनना चाहता है। वह हमारे विश्वास को लेता है, चश्मा पहनता है और हमें ऐसे देखता है, जैसे हम यीशु मसीह के शरीरधारी हों; और हम में अपना जीवन डालता है ताकी वह उस में निवास कर सके और हमारे जीवन के कष्टों को दूर कर सके। वह हमें अपनी धर्मिकता देता है। मैं इसलिये प्रधानों की निजी धार्मिकता के विरुद्ध हुँ। यदी आप का अंधकार दोष है तो, ***यहोवा- सिदकेनु*** के नाम पर गिर जाईये।

"अब मैं धैर्य खोने वाला हुँ। और हमेशा जो होने वाली बातें हैं उन्हें देख कर ऐसा होता है। मैं इतना उत्सुक हुं की मैं नहीं जानता की यह क्या है. यह मेरा धैर्य है।" ***यहोवा-शालोम***। इस से पहले की आप साँस रोक कर किसी मनोचिकित्सक को ५००$ प्रति घंटे के हिसाब से दें और उसे अपने गडबडी वाले बिते हुए दिनों के बारे में बतायें, पहले ऐसा था, अब ऐसा है। मैं चाहूँगा की आप ऐक गहरी साँस लें और ... परमेश्वर के समक्ष अपने आप को डाल दें और कहें, "प्रभु, आप का नाम ***यहोवा-शालोम है।"*** आप आते जाते कहें: "वह हमारी शांती है।" ऐसा हो सकता है यदी आप अंधकार से हट कर अपना ध्यान उसके नाम पर लगायें। बाईबल कहती है, "वह तेरे विषय अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा" और "वह तुम्हें पूर्ण शांती देगा... पूर्ण शांती, जिस का मन तुम पर आ गया है।" मैं आप लोगों से कहना चाहूँगा, मैं इस राह पर चल सका हुं। मैं परमेश्वर का सब से बडा विरोधी हुँ जिसे नियंत्रण में लाना परमेश्वर के लिये कठिन था, परन्तु जब मैं परमेश्वर के कहे अनुसार करता हुँ ... (मैं केवल आदर्श विचारों का प्रचोर नहीं कर रहा), तो यह लाभदायक होता है। वह आपकी शांती बन सकता है। वह आप के साथ उपस्थित है। वह आप की समस्याओं से बडा है।

"मैं नहीं जानता की मेरे जीवन का अगला कदम क्या होना चाहिये। मेरा मतलब है की मैंने निर्णय लिये हैं...." आप में से कितने यह समझते हैं की ... आप के पास कोई अवसर नहीं है? फिर आप अवसर पाते हैं, और इसी तरह चालिस और अवसर आते हैं। कितने ऐसा अनुभव करते हैं? मेरा मतलब है, मैं चल रहा हुँ, काश मेरे पास कोई चुनाव होता; कोई दरवाजे खुले नहीं हैं, कोई चुनाव नहीं है, और फिर जैसे डूबते हुए को जीवन दान देने वाला जैकट मिल जाता है और एक साथ बचाव जहाज से जैसे और चालिस फैंके जा रहे हैं, और मैं उन से बच रहा हुँ की कोई मेरे सर पर आ कर न लग जाये। फिर मैं डूब जाता हुँ क्योंकि मुजे यह नहीं पता की कौन सा जैकट लेना है। विश्राम। विश्राम। ***यहोवा-रोही*** के कारण एक आप के सामने उभर आयेगा। अपने आप को विश्वास पर डाल दीजीये, "यहोवा मेरा चरवाह है," वह मुझे राह दिखायेगा।

मैंने पर दो सप्ताह पहले प्रचार किया था। जब आप त्तवज्ञान पर प्रचार करते हैं तो वह बिना किसी तर्क के नहीं होता, बाईबल भी अलग तरीके से यही कहती है, ताकी हम सब उसे समझ सकें। "यहोवा मेरा चरवाह है," - पुराने जमाने के अर्थ के अनुसार, मध्य पूर्व में जब चरवाहे अपनी भेडों को चराने ले जाते थे। वह उन्हें भगाता नहीं परन्तु राह दिखाता है। "यहोवा मेरा चरवाह है," वह मुझे ले चलता है। गर जा कर भजन संहिता २३ पढिये - मानव साहित्य का सब से बडा विश्वास: "यहोवा मेरा चरवाह है, मुझे कुछ घटी न होगी।" इब्रानी कहते हैं की, "वह आवश्यक्ता को दूर हटाता है, वह मेरे सामने मेज बिछाता है वह मुझे नहीं छोडता। हमारी शक्ति उस में है, क्योंकि वह हमारे साथ है। वह प्रभुओं का प्रभु है, परन्तु वह शत्रुओं का भी

परमेश्वर है, या मेरे शत्रुओं के सामने बी वह मेरा परमेश्वर है।"

"यहोवा मेरा चरवाह है।" वह आप को ले चलेगा परन्तु आप को वह विशेष कार्य करना है। मैंने पिछले कई सप्ताह से यह कहा है की परमेश्वर के वादे को अपना बनाईये। "जीस मन से मनुष्य विश्वास करता है, मुँह से उसे पूरा किया जाता है।" अपने आप को परमेश्वर के चरणों में डाल दीजीये और कहीये, "प्रभु, आप मेरे चरवाह हैं। आप मुझे ले चलेंगे। आप मेरी राह को सीधी करेंगे। वह मुजे इस परेशानी से छुटकारा दिलायेंगे।" मैंने पिछले वर्ष इस बात पर विश्वास नहीं किया। मैंने इस नाम पर पिछले वर्ष इतना समय नहीं बिताया क्योंकी मैं इस पर विश्वास नहीं करता था - मैं करना चाहता था। मुझे पता था की चरवाहे को कहाँ जाना है, परन्तु वह मेरा सहयोग नहीं दे रहा था। मुझे लगा की मेरे पास एक मूक चरवाह है, और मैंने इस के बारे में अधिक प्रचार नहीं किया। आज मैं आप से कह सकता हुँ, "यहोवा मेरा चरवाह है।" वह मुझे ले चलता है। "मुझे कुछ घटी न होगी।" वह आप का चरवाह भी बनेगा। चाहे आप की जो बी समस्या हो वह आप का चरवाह बनेगा।

***यहोवा क्षमा।*** समय की कमी है। यदी मैं दूसरी विशेषताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता, या मुझे इस विशेषता की दूसरी विशेषताओं से पहले आवश्यक्ता पड सकती है। ***यहोवा क्षमा*** - "परमेश्वर उपस्थित है।" इन में से हर नाम को परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं को दिया, ताकी वे संसार के लोगों को बता सकें की वह क्या है। और इस के लिये उस ने एक शब्द चुना। "मैं इस तरह अपने लोगों को दर्शन दूँगा ताकी अंधकार के समय वे समझ सकें की उन्हें किय की आवश्यक्ता है। यह वह ज्योती है जो अंधकार से ऊपर है। आप इसे नहीं देख सकते परन्तु मैं वहाँ पर हुँ, और ज्योती जल रही है। ऊपर उठिये और उसे ले लीजीये।"

ये सारे यहोवा के नाम मेरी हर परिस्थिती में उपयोगी होते हैं, और यदी कोई उपयोगी नहीं होता तो, ***यहोवा क्षमा*** तो है - "परमेश्वर उपस्थित है।" मैं अंधकार में किसी भी स्थिती में रहूँ, मैं जो भी कर रहा हुँ, मैं जिस जगाह भी जाऊँ, वह हमेशा मेरे साथ है। विश्वयापी की गुप्त विचार धारणा का अर्थ मुझे समझ में नहीं आया; मैं विश्वास के साथ इसे मानता हुँ। वह है। मैं कभी भी अकेला नहीं हुँ; वह है - ***यहोवा क्षमा***।

मेरे पास कुछ और नाम हैं - व्यवस्थाविवरण ३३। परमेश्वर ऐसा नाम लेते हैं जो अनोखा है। इसे मत देखीये; मैं आप को बताता हुँ (१६ वचन)। प्रभुओं का प्रभु वह है जिस के बारे में वह बता रहा है - मूसा का महान गीत। व्यवस्थाविवरण ३३ में मूसा अपनी अंतिम व्याख्यान उन लोग से कह रहा है जिन्हें वह दास्तव से छुडा कर लाया था, वे लोग जिन के साथ ुसने जंगल की यात्रा तैय करी थी।

क्योंकि उन लोगों ने उसकी आत्मा को दुखाया था - यह समस्या हर नेता को करनी पडती है, उन्होंने उसकी आत्मा को दुखाया और इसलिये उसने चट्टान को दो बार मारा जिस से उसने मसीह को नष्त कर दिया जो एक ही बार मरता है, इसलिये वह वादा किये हुए देश में प्रवेश नहीं कर सका। उसने परमेश्वर से बिन्ती करी की वह जा सके, परन्तु परमेश्वर ने कहा, "नहीं।" गुस्से ने उसे परेशानी में नहीं डाला। वह सिनै पहाड पर भी गुस्से में आता है और पत्थर की तख्तियों को तोड डालता है, परन्तु इस गुस्से ने परमेश्वर के दैवी दर्शन को बताया है की आज्ञायें तोथी जा सकती हैं - मनुष्य ने आज्ञाओं को अपने हाथों से तोडा और यह केवल मसीह में रखी जा सकती हैं जो की दूबारह पत्थरों को तराश कर बनाई गयीं और वाचा के संदूक में रखी गयीं।

उसके गुस्से ने परमेश्वर की इच्छा को प्रकट किया। परन्तु जब विद्रोहियों ने उसकी आत्मा को दुखाया

तो उसने गुस्से में, जब परमेश्वर ने उससे कहा की "चट्टान से कह" तो पानी निकलेगा; वह लोगों पर चिल्लाता है की तुम "विद्रोहि" हो और चट्टान पर मारता है। इस गुस्से ने परमेश्वर के साथ उसकी वाचा को तोड दिया, क्योकि मसीह की तरह उसे केवल एक बार मारना था। इस के कारण उसे वादा किये हुए देश में जाना मना हो गया। फिर उसने कहा की "परमेश्वर, क्या मैं उसे देख सकता हुँ?" तब परमेश्वर उसे नबो पर्वत ले गया और वहाँ से उसे वादा किया हुआ देश को देखने दिया परन्तु प्रवेश नहीं करने दिया। और वह लोगों को अंतिम निर्देश देता है और यह ***यहोवा क्षमा*** के अनुरूप है, "परमेश्वर उपस्थित है।"

वह उस परमेश्वर के बारे में उन्हें बताता है जिससे वह बात करता था। वह उस परमेश्वर के बारे में नहीं बताता जिस ने उसे आदेश दिया की वह सिनै पर्वत पर आये और गर्जते हुए और आवाज के साथ और आग के साथ आज्ञाओं को लिखा था। वह कहता है, "वह जो झाडी में बसता है उसकी प्रसन्नता।" सारी बईबल में केवल यही एक संदर्भ है जहाँ पर फिरौन के सामने से भागने के चालिस वर्षों बाद, चालिस वर्षों तक यह समझने के बाद की वह अकेला है (अंधकार), जंगल की पिछली ओर चालिस वर्षों तक परमेश्वर से कोई बात चीत नहीं, और अचानक ये जलती हुई झाडी उभर आती है जो जल नहीं रही और एक अवाज सुनाई पडती है। और जैसा की एक या दो सप्ताह पहले मैंने बताया की उस आवाज ने यह नहीं कहा, "अरे ओ, तुम जो वहां हो।" आवाज ने यह भी नहीं कहा, "ओ, चरवाहे।"

चालिस वर्ष तक और कोई बात नहीं, परमेश्वर जानता था की मूसा कहाँ है और वह झाडी में दिखते हैं और कहते हैं, "मूसा।" उन्होंने उसे नाम से पुकारा। अब जो कुछ भी हुआः पानी को मीठा बनाना, लाल समुद्र को दो बाग में भँटना, सिनै पहाडी पर रौशनी और गडगडाहट, मिरियम के कोड के लिये प्रार्थना और चंगाई, चट्टान को मारने से पानी का निकलना ... ये सारी सादें जो इतने वर्षों से उसके साथ थीं और जिन के कारण उस ने परमेश्वर का नाम रखाः "झाडी का परमेश्वर" इस के कारण वह जानता था की चाहे जो भी हो, वह कभी भी परमेश्वर की उपसेथिती से दूर नहीं गया।

फिर वह कहता है "प्रसन्नता" - बहुत मजबूत नहीं। "दया" ..., "अनुग्रह" ..., "उस में आन्नद" इस के दो अर्थ हैं, "प्रसन्नता" - "उस में आन्नद" और "जीवन में इस के साथ भाग लेना।" उस परमेश्वर की "प्रसन्नता" जो आप में आन्नदित होता है और आप के जीवन में भाग लेता है और यदी आप उससे पूछें तो वह निर्देश भी देगा, वही "झाडी का परमेश्वर" है। यदी आप के पास २६ *अनुवाद वाली बाईबल* है, तो उस में व्यवस्थाविवरण ३३ का १६ वचन इस तरह अनुवाद करता है, "परमेश्वर जो ***शेकिनाहद*** है।"***शेकिनाह महिमा"*** का सम्बन्धि शब्द है, जो परमेश्वर की उपस्थिती को बताता है। हम इसे ***शेकिनाह*** कहते हैं जब वह पवित्रों में पवितेर के साथ वाचा के संदूक पर आया था, और अभिषेक के दिन उस पर रौशनी दिखाई देती थी - परमेश्वर अपने आप को ज्योती की तरह दर्शाता थाः ***शेकिनाह।***

१६वाँ वचन कहता है की परमेश्वर झाडी में ***शेकिनाहद*** था और आप की २६ अनुवाद वाली बाईबल कहती है "काँटों वाली झाडी" - बदसूरत, गंदी, धूल से भरी काँटों की झाडी। इतने वर्षों से रौशनी और थर्थराना और गडगडाहट और लाल समूद्र का दो भागों में बट जाना, ये सब मूसा के दिमाग में नहीं आये। "झाडी का परमेश्वर मेरे पास आया और काँटों वाली झाडी में से मुझे नाम ले कर पुकारा। वह परमेश्वर जो मेरे साथ है, ***यहोवा क्षमा।"*** वह हमारे साथ हमेशा रहता है। मुझे इस से कोई मतलब नहीं की आप का अंधकार क्या है। आप जहाँ कहीं भी हैं, परमेश्वर आप के अंदकार में आप के साथ है ताकी आप उसके नाम पर अपने आप को निछावर कर सकें।

अभी समाप्त नहीं हुआ। एक अंतिम वाक्यः "उसे विश्वास करने दें" या "परमेश्वर के नाम पर ... अपने आप को निछावर कर दे और अपने परमेश्वर पर निर्भर रहे।" "निर्भर' शब्द का प्रयोग हम अकसर करते हैं: ***शान***, ***शान*** का मूल है, "लकडी का सहारा लेना।" मैंने विश्वास के कई शब्द बतायें हैं, परन्तु यह सब कार्य करने वाले शब्द हैं। यह शब्द शान का अर्थ है "लकडी का सहारा लेना।" अकसर पानी के जहाज चलाने वालों की भाषा में इस का प्रयोग लंगर निकालने या डालने के लिये परन्तु मुख्यता इस का प्रयोग किसी वस्तु को सहारा देने के लिये किया जाता है।

हमारे पास एक अधिकार है ... यदी हम मसीही है तो हम परमेश्वर के हैं; परन्तु आप इसे अपने अंधकार में या मेरे अंधकार में पलट सकते हैं ... यदी आप अपनी आवश्यक्ता के अनुकूल उसके नाम पर निर्भर हो जायें: यदी वह आवश्यक्ता है तो, ***यहोवा-जिरेह***; यदी सेहत और चंगाई है तो, ***यहोवा-रफा***; यदी राह दिखाना है या चरवाह बनना है तो, यहोवा रोही, और यहोवा क्षमा तक सारे नामः "परमेश्वर उपस्थित है।"

जब आप ने अपनी आवश्यक्ता के अनुसार परमेश्वर के नाम पर विश्वास किया है, मेरी बाईबल मुझे अधिकार देती है की मैं उसे अपना बनाऊँ: "उसके परमेश्वर पर भरोसा रखो।" बाकी सब छोड दो...। यदी वह आपकी आवश्यक्ता के विपरित है, तो उसे अलग कर दीजीये; परन्तु परमेश्वर के दैवी प्रकाशन के वृक्ष को पकड लीजीये और उसके नाम के उस दैवी प्रकाशन को अपना लीजीये जो आप के अनुकूल हो। उसे अपना बना लीजीये। हठ धर्मि बन जाईये - अकेले में।

"यह मेरा है, यह मेरा वादा है।" इस अंधेरे में बाकी सब दूर हट जाये। मेरा विश्वास उस वस्तु पर है जिस के साथ मैं रहने वाला हुँ, उस पर निर्भर हुँ, उस पर लंगर डाला है, उस पर स्थापित हुँ। मैं उसे अपना बना रहा हुँ। मैं परमेश्वर का हुँ, परन्तु उसने मुझे अधिकार दिया है की, इस विशेष दिशा में मैं उसे अपना बनाऊँ। वह मेरा परमेश्वर है... वह मेरी सम्पत्ति है... वह मुझे चंगा करने वाला है... वह मेरी आवश्यक्ताओं को पूरा करने वाला है... वह मेरी शांती है... वह मेरी धार्मिक्ता है... वह मेरा चरवाह है... वह मेरी उपसेथिती है... वह मेरा है।"

केवल यह ज्ञान की वह मेरा है और उस पर मेरा अधिकार है, तुम्हें अंधकार से स्वतंत्र करेगा और यदी मैं उँगली के नाखुन से उसे पकड कर लचक जाऊँ, तो मैं अपनी आँखें ज्योती के सामने खोलूँगा जहाँ कोई बादल नहीं है। आज के लिये मेरा यही उपदेश है।

**लेखअधिकार © २००७, पादरी मेलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित**

**Copyright © 2007, Pastor Melissa Scott. - all rights reserved**